केंकड़ों की लोक कथाऐं

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Kekadon Ki Lok Kathayen (Folktales of Crab)
Cover Page picture : Crab
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
केंकड़ों की लोक कथाऐं 7
1 केंकड़े ने अपना खोल कैसे पाया 9
2 चॉद बचाया 20
3 केंकड़ा राजकुमार 26
4 सोने के अंडे वाला केंकड़ा 37
5 बेवकूफ बन्दर और केंकड़ा 50
6 उसके पैरों पर पंख 58
7 केंचुए की ऑखें क्यों नहीं होतीं 66
8 छोटे केंकड़े की जादुई ऑखें 70

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से भी अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

केंकड़ों की लोक कथाऐं

दुनियॉ मे कुछ जानवर ऐसे हैं जिनकी लोक कथाऐं बहुत मिलती हैं जैसे शेर खरगोश लोमड़ी हाथी कुत्ता बिल्ली आदि। पर कुछ जानवर ऐसे भी हैं जिनकी लोक कथाऐं बहुत कम मिलती हैं। और कुछ की तो बिल्कुल ही नहीं मिलतीं। शायद ऐसा इसलिये होगा कि जहॉ जो जानवर बहुतायत से पाये जाते हैं या फिर बच्चों के लिये वे जान पहचान के होते हैं वहॉ उन्हीं की लोक कथाऐं बन जाती हैं।

शेर खरगोश हाथी आदि, यहॉ तक कि कुछ मकड़ों की भी लोक कथाऐं हमने अलग से दी हैं। पर यह पुस्तक हम एक अजीबोगरीब जानवर केंकड़े की लोक कथाओं पर प्रकाशित कर रहे हैं। केंकड़ा एक पानी का जानवर होता है और बहुत सारे लोग उसको खाते भी हैं। चीन देश की दंत कथाओं में इसकी एक बहुत ही खास जगह है। वहॉ की कई दंत कथाओं में उसका वर्णन आता है। यह वहॉ के समुद्री ड्रैगन राजा के चौकीदार के रूप में काम करता है।

ये सभी लोक कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 केंकड़े ने अपना खोल कैसे पाया[1]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पश्चिमी अफ्रीका के बुरकीना फ़ासो देश की लोक कथाओं से ली है।

बहुत दिन पहले की बात है कि केंकड़ों के पास उस समय कोई खोल नहीं हुआ करता था। उनका शरीर भी उतना ही चिकना था जितना कि नदी में रहने वाले दूसरे जानवरों का होता है।

उन्हीं दिनों एक बहुत ही बुरी बुढ़िया भी अपनी पोती के साथ रहती थी। उस बुढ़िया का बेटा और बहू दोनों मर चुके थे और वह बुढ़िया अपनी पोती के साथ अकेली रहती थी। वह उसके साथ बहुत ही बुरा बर्ताव करती थी।

वह अक्सर उसको ऐसे ऐसे काम करने के लिये भेजती थी जो बहुत ही नामुमकिन से होते थे और जब वह ऐसे काम नहीं कर पाती थी तो उसको उसके साथ बुरा बर्ताव करने का एक और मौका मिल जाता था।

एक दिन उसने उस लड़की को एक टोकरी ले कर पानी भरने के लिये भेजा। वह छोटी लड़की गयी पर जब वह बिना पानी लिये हुए वापस आयी तो उस बुढ़िया ने उसे बहुत पीटा और गालियॉ दीं।

[1] How the Crab Got Its Shell – a folktale from Burkina Faso (formerly Upper Volta), West Africa Adapted from the Book "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2011. This book is available in Hindi from Sushma Gupta as an e-book for free.

वह बोली — "ओ आलसी बेवकूफ, तू किसी काम की नहीं। क्या तुझको मालूम नहीं कि तू एक टोकरी में पानी नहीं भर सकती?"

लड़की बोली — "मालूम है दादी। मगर तुमने ही तो मुझे उसमें पानी भरने के लिये कहा था।"

"अगर मैं तुझे अपने आपको मारने के लिये कहूँ तो क्या तू अपने आपको मार लेगी?" बुढ़िया गुस्से से बोली।

यह सुन कर उस लड़की को बहुत दुख हुआ और गुस्सा भी आया क्योंकि वह जानती थी कि किसी भी तरीके से वह टोकरी में पानी नहीं भर सकती थी।

पर अगर वह अपनी दादी से इस बात पर बहस करती या उससे कोई सवाल जवाब करती तभी भी उसी को डॉट पड़ती।

उसने तो उसकी बात को केवल इसलिये मान लिया था ताकि वह डॉट खाने के लिये थोड़ा सा समय टाल सके। उसकी दादी भी यह बात जानती थी।

एक दिन उस लड़की ने अपनी दादी से कहा — "दादी।"

पर दादी तुरन्त ही उसकी बात काट कर बोली — "मैंने तुझसे कितनी बार कहा है कि तू मुझे दादी मत कहा कर। अगर तूने फिर कभी मुझे दादी कहा तो मैं तुझे पहले से भी ज़्यादा मारूँगी।"

"पर तुमने मुझे अपना नाम भी तो कभी बताया नहीं।" लड़की बोली।

"यह मालूम करना तेरा काम है। और अगर तूने मेरा नाम मालूम नहीं किया तो फिर तुझे कभी इस घर में खाना नहीं मिलेगा।"

यह सुन कर लड़की बहुत दुखी हुई क्योंकि वह जानती थी कि बच्चे अपने से बड़े लोगों को नाम से नहीं पुकारते। उनको उनके किसी बच्चे के माता या पिता कह कर ही पुकारा जाता था। अगर उनके कोई बच्चा नहीं होता था तो जैसे "हमारे माता" और "हमारे पिता" के नाम से पुकारा जाता था।

वह छोटी लड़की अपनी दादी का नाम किसी बड़े से भी नहीं पूछना चाहती थी क्योंकि इससे उसको यह लगता था कि अगर उसने दादी का नाम किसी बड़े से पूछा तो वे लोग सोचेंगे कि वह बड़ों की कितनी बेइज़्ज़ती करने वाली लड़की है।

इससे वे लोग यह भी सोचने लगेंगे कि उसकी दादी ने उसके बारे में कुछ झूठ बोला है। और अगर उसने नाम पता नहीं किया तो वह तो भूखी ही रह जायेगी।

यह सोच सोच कर तो वह छोटी लडकी बेचारी और ज़्यादा परेशान हो गयी और वह अकेली रहने लगी। जब भी वह नदी की तरफ जाती वह वहॉ उसके किनारे बैठ जाती और नदी के पानी में पड़ी अपनी परछाईं से बात करती रहती।

फिर वह गाती और अपने माता पिता को उनका नाम ले ले कर बुलाती रहती। वह उनको बताती कि कैसे उसकी दादी उसके

साथ बुरा बर्ताव करती थी और फिर उनसे अपनी इस मुश्किल में सहायता करने के लिये कहती।

एक दिन जब वह नदी के किनारे बैठी गा कर अपने माता पिता को बुला रही थी उसने अपनी मुट्ठी में पानी भरा और अपने पैरों पर डाल लिया। उसने फिर गाया और हॅस कर अपने आपको तसल्ली दी।

फिर उसने नदी पर झुक कर पानी लिया और वहॉ से घर चलने को हुई कि एक केंकड़ा पानी के ऊपर आ गया।

केंकड़ा उस लड़की से बोला — "मैं यहॉ तुमको रोज आते देखता हूॅ। तुम हमेशा रोती रहती हो और दुख भरे गीत गाती रहती हो, क्यों?"

लड़की बोली — "क्योंकि मेरी दादी बहुत बुरी है। वह मुझे खाना भी नहीं देगी जब तक मैं उसका नाम न जान जाऊॅ।"

केंकड़ा बोला — "हॉ तुम्हारी दादी है तो बहुत ही बुरी बुढ़िया। पर वह वह ऐसा क्यों चाहती है कि तुम्हें उसका नाम मालूम हो?"

लड़की बोली — "क्या इससे यह साफ जाहिर नहीं है कि वह हमेशा इस बात का मौका ढूॅढती रहती है कि वह मुझसे अपने बुरे बर्ताव के लिये कोई सफाई दे सके।

अगर मैं उसका नाम नहीं जान पाऊॅगी तो वह मुझे खाना नहीं देगी और उसको मुझे खाना न देने का एक बहाना मिल जायेगा।

और अगर मैं उसका नाम जान जाती हूँ तो भी वह मुझे उस नाम से बुलाने के लिये मारेगी। पर भूखी रहने और न पीटे जाने की बजाय मैं खाना खा कर पीटा जाना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

केंकड़ा बोला — "ठीक है। मैं तुम्हारी इस काम में सहायता करूँगा। लेकिन तुम मुझसे वायदा करो कि तुम उससे यह नहीं बताओगी कि उसका नाम तुम्हें मैंने बताया है क्योंकि अगर उसको यह पता चल गया कि उसका नाम तुम्हें मैंने बताया है तो मैं नहीं बता सकता कि वह मेरी क्या हालत करेगी।"

"मैं वायदा करती हूँ। मैं वायदा करती हूँ। मैं दादी को कुछ नहीं बताऊँगी। बस तुम मुझे उसका नाम बता दो।" लड़की खुशी से चिल्लायी।

केंकड़ा बोला — "तुम्हारी दादी का नाम है "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"[2]।"

"सर्जमोटा अ... और आगे क्या?" लड़की ने इतना लम्बा अजीब सा नाम सुन कर पूछा। उसने इस नाम को केंकड़े के सामने कई बार दोहराया "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा", "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"।"

"वाह, क्या नाम है? क्या इसी लिये वह चाहती थी कि कोई उसका नाम न जाने? धन्यवाद मिस्टर केंकड़े, मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगी।" लड़की ने खुश हो कर जवाब दिया।

[2] Sarjmota Amoa Oplem Dadja

इसके बाद उसने अपना कैलेबाश[3] पानी से भरा और घर चल दी। चलते समय वह उस नाम को बार बार दोहराती जा रही थी ताकि वह उसे भूल न सके।

पर बहुत जल्दी ही उसका दिमाग इधर उधर भटकने लगा। वह अपनी लावारिस होने की ज़िन्दगी के बारे में सोचने लगी। फिर वह अपनी ज़िन्दगी अपने माता पिता की ज़िन्दगी से मिलाने लगी।

"मैं अपने माता पिता को हमेशा अपने पास रखूँगी चाहे वे मुझे कितनी भी बुरी तरीके से क्यों न रखें। मॉ ठीक कहती थी — "तुमको मेरे जितना प्यार कोई नहीं कर सकता।"

जब वह अपने ख्यालों में से निकली तो उसको पता चला कि वह तो अपनी दादी का नाम ही भूल गयी थी — "सरगामौन्टा स.." ओह मैं तो दादी का नाम ही भूल गयी। अब मैं क्या करूँ। मुझे तो फिर भूखा रह जाना पड़ेगा। उफ यह तो बहुत गड़बड़ हो गयी।"

वह थोड़ी देर तक वहीं खड़ी रही और सोचती रही कि वह क्या करे – क्या वह नदी पर वापस जाये और उस केंकड़े से दादी का नाम फिर से पूछे? और या फिर वह घर वापस जाये और भूखी रहे?

[3] Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa. See its picture above.

जल्दी ही उसकी खाना खाने की इच्छा ने ज़ोर पकड़ा और वह नदी की तरफ जाने लगी पर वह नदी की तरफ का लम्बा रास्ता ही भूल गयी। उसने तुरन्त ही अपना पानी का कैलेबाश जमीन पर रखा और उसका पानी गर्म तपती जमीन पर बिखेर दिया।

वहॉ की झाड़ियों को वह पानी पी कर बड़ा आराम मिला। वे उस पानी को पी कर इतनी खुश हुईं कि जब वह पानी सूरज की गर्मी से धरती में बनी दरारों में गया तो कोई भी उनका ताली बजाना और खुश होना सुन सकता था।

खाली कैलेबाश ले कर जब वह लड़की नदी पर गयी तो वह केंकड़ा पहले की तरह से उसकी दादी के नाम के साथ बाहर नहीं आया।

फिर भी वह बाहर आ कर बोला — "मुझे लगता है कि मैंने तुम्हें तुम्हारी दादी का नाम बता कर गलती की क्योंकि तुम तो उसको भूल ही गयीं। जबसे तुम यहॉ से गयी थीं मैं तभी से मैं यह सोचता रहा कि मुझे तुमको उसका नाम नहीं बताना चाहिये था।

तुम्हारी दादी सचमुच में ही बहुत बुरी है और मैं नहीं चाहता कि वह मेरे सबसे बुरे दुश्मन पर भी गुस्सा करे। मुझे लगता है कि तुम्हारा उसका नाम भूलना एक तरह का शकुन है। कम से कम मैं तो उसके गुस्से से बच गया।"

उस छोटी लड़की ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे उसका नाम बता दो नहीं तो मैं भूखी रह जाऊॅगी। उसको इस

बात का कभी पता नहीं चलेगा कि यह नाम मुझे तुमने बताया है। यह सब मेरे और तुम्हारे बीच में ही रहेगा।"

उसने केंकड़े को यह बताते हुए कि अगर वह दादी का नाम बिना जाने घर चली जाती तो उसकी दादी उससे किस तरह का बर्ताव करती कई बार केंकड़े से दादी का नाम बताने की प्रार्थना की।

इसके अलावा उसने केंकड़े को यह भी बताया कि अगर दादी को यह पता चला कि नदी पर उसने कितना समय बर्बाद किया तो उसकी उलझन और भी बढ़ सकती थी।

इस तरह उसने केंकड़े को अपनी दादी का नाम फिर से बताने पर मजबूर कर दिया और केंकड़े ने उसे उसकी दादी का नाम फिर से बता दिया।

केंकड़ा बोला — "ठीक है। उसका नाम है "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"। मैं इस नाम को फिर से कहता हूँ क्योंकि अब इसके बाद तुम मुझे दोबारा यह नाम बताने के लिये यहाँ नहीं पाओगी – "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा"।"

लड़की बहुत खुश हुई और खुश हो कर घर चल दी। इस बार भी वह उस नाम को बार बार दोहराती हुई चली जा रही थी कि उसका दिमाग फिर से भटकने लगा।

पर अबकी बार उसने उसे भटकने से रोका — "नहीं, "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा", "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा" और वह उसे दोहराते हुए घर आ गयी।

शाम को जब वह शाम का खाना बनाने बैठी तो अचानक उसके मुँह से निकल गया "सर्जमोटा अमोआ ओपलैम डाजा", जैसा कि वह नदी से आते समय दोहराती चली आ रही थी।

बुढ़िया ने यह सुन कर उसको गाली दी — "ओ कमीनी बच्ची, मेरा नाम तुझे किसने बताया?"

लड़की झूठ बोल गयी — "किसी ने नहीं।"

बुढ़िया बोली — "किसी ने तो बताया है, कौन है वह?"

लड़की फिर बोली — "नदी ने बताया।"

बुढ़िया ने पूछा — "नदी में से किसने बताया?"

लड़की बोली — "पता नहीं। मुझे तो ऐसे ही पता चला।"

बुढ़िया गुस्से से भर गयी। उसने एक कैलेबाश का बर्तन उठा लिया और नदी की तरफ तेज़ तेज़ भागी। कभी वह तेज़ तेज़ चलती और कभी वह तेज़ तेज़ भागती।

सबको पता चल गया कि आज वह किसी पर अपना गुस्सा उतारने जा रही थी। रास्ते में उसे जो कोई भी मिला वह उसी से पूछती गयी कि क्या उसको मालूम था कि उसकी पोती को उसका नाम किसने बताया था।

सबने मना कर दिया कि वे इस बारे में कुछ नहीं जानते थे। वह इसी तरह नदी की तरफ भागती चली गयी जब तक वह केंकड़े के पास नहीं पहुँच गयी।

अब क्योंकि हर एक ने मना कर दिया था कि उनको यह पता नहीं था कि उसकी पोती को उसका नाम किसने बताया, तो केंकड़े को पूरा यकीन था कि बुढ़िया को यह पता चल गया था कि उसी ने उसका नाम उसकी पोती को बताया था।

बुढ़िया ने जाते ही केंकड़े से पूछा — "उस छुटकी को मेरा नाम क्या तुमने बताया था?"

केंकड़ा बोला — "हॉ।"

हॉ करते ही केंकड़े को पता था कि अब वहॉ से भागने में ही उसकी भलाई है नहीं तो वह बुढ़िया उसको पीटते पीटते मार ही देगी। सो वह वहॉ से भाग लिया।

पर उस बुढ़िया ने उसका पीछा किया। उसने अपना कैलेबाश पकड़ा और केंकड़े के ऊपर दे मारा। इससे उसका कैलेबाश दो हिस्सों में टूट गया।

उसने उसका आधा हिस्सा उठाया और केंकड़े के पीछे फिर से भागी। जब वह उसके पास तक आ गयी तो उसने कैलेबाश के उस आधे हिस्से को उसके ऊपर उलटा दे मारा जिससे वह केंक़ड़े के शरीर पर और फिर जमीन में गड़ गया।

वह उस आधे हिस्से को निकालने गयी तो केंकड़ा उस कैलेबाश के आधे टुकड़े को लिये हुए वहॉ से जल्दी से झाड़ी में भाग गया।

इस तरह से कैलेबाश का वह आधा हिस्सा अभी भी उसके शरीर पर लगा हुआ था। इसी वजह से केंकड़े अभी भी अपने शरीर पर कैलेबाश का खोल लिये फिरते हैं।

2 चॉद बचाया[4]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश[5] की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि गहरे समुद्र में एक बहुत बड़ा केंकड़ा[6] रहता था। वह समुद्र का एक बहुत बड़ा जीव था – सबसे बड़ी व्हेल मछली से भी बड़ा। वह समुद्र की तली में एक बहुत बड़े गड्ढे में रहता था।

वह खाना ढूँढने के लिये अपने घर में से दिन में दो बार बाहर निकलता था। जब वह अपना घर छोड़ता था तो उसके घर में तुरन्त ही पानी भर जाता था। क्योंकि वह केंकड़ा बहुत बड़ा था इसलिये समुद्र के किनारे का सारा पानी उसके घर में चला जाता था।

जब केंकड़ा अपना खाना खत्म कर लेता था तब वह अपने गड्ढे में वापस चला जाता था। इससे पानी को फिर से किनारों के बाहर तक फैलना पड़ जाना पड़ता था।

कुछ लोग इसको ज्वार भाटा[7] भी कहते थे।

---

[4] Saving the Moon – a folktale from Philippines, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=95
Retold and written by Mike Lockett.

[5] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards West to Indian Peninsula.

[6] Crab. See its picture above.

[7] High Tides and Low Tides

एक शाम एक टापू की राजकुमारी अपने घर के पास ही समुद्र के किनारे टहल रही थी। घूमते घूमते कभी कभी वह समुद्र की तरफ भी देख लेती थी।

कि अचानक उसने समुद्र में एक टापू उभरता हुआ देखा। वह उसको बड़े आश्चर्य से समुद्र में से ऊॅचा और ऊॅचा निकलते हुए देखती रही।

फिर उसने देखा कि वह टापू खड़ा हुआ और समुद्र के किनारे की तरफ आने लगा। अरे, वह तो टापू नहीं था वह तो बहुत बड़ा वाला केंकड़ा था।

यह केंकड़ा तो उस टापू के सबसे ऊॅचे पेड़ से भी ऊॅचा था जिस पर वह रहती थी, और पेड़ से ही क्यों वह तो टापू के सबसे ऊॅचे पहाड़ से भी ऊॅचा था। राजकुमारी ने कोई चीज़ इतनी बड़ी पहले कभी नहीं देखी थी।

पहले उसने उसके आगे वाले दोनों बड़े बड़े हाथ[8] देखे। फिर उसने उसकी बड़ी बड़ी ऑखें देखीं। तो वह केंकड़ा तो आसमान में उगते हुए चॉद को देख रहा था।

और वह राजकुमारी बड़े ध्यान से उस केंकड़े के दोनों आगे वाले हाथों को खुलते और बन्द होते देख रही थी। फिर उसने उस का खुलता और बन्द होता मुॅह देखा।

[8] Translated for the word “Pinchers” of the crab

वह समुद्र में से इतनी ज़ोर से ऊपर उठा जैसे वह चॉद को खा जाना चाहता हो। उस बड़े केंकड़े की बड़ी बड़ी लाल लाल ऑखें आसमान में चढ़ते हुए चॉद का पीछा कर रही थीं। वह चॉद को खाने के लिये बहुत ज़ोर से ऊपर उठ रहा था।

उसने अपने हाथों से उसको पकड़ने की कोशिश की – खटाक, खटाक। यह आवाज तो बिजली की कड़क की सी आवाज थी।

यह आवाज सुनते ही राजकुमारी घबरा गयी। अगर कहीं उसने चॉद को पकड़ लिया और खा लिया तो? तब तो रात का आसमान हमेशा के लिये अँधेरा हो जायेगा।

टापू के मछियारों के लिये समुद्र सुरक्षित नहीं रहेंगे। टापू के नौजवान लड़के लड़कियॉ फिर चॉदनी रात में हाथ में हाथ डाले नहीं घूम पायेंगे। यह सोच कर वह तो परेशान हो गयी।

राजकुमारी को मालूम था कि आज उसके टापू के लोग एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम कर रहे थे। लोग गा रहे थे, ढोल बजा रहे थे, कुछ लोग नाच रहे थे और आनन्द मना रहे थे।

उसको यह भी मालूम था कि टापू के लोग उस केंकड़े को जब तक देख पायेंगे और चॉद खाने से रोक पायेंगे तब तक तो बहुत देर हो चुकी होगी। इसलिये केंकड़े को चॉद को खाने से रोकने के लिये राजकुमारी को सहायता की अभी अभी जरूरत थी।

गॉव वापस जाने का भी समय नहीं था। इसके अलावा वह इतनी ज़ोर से चिल्ला भी नहीं सकती थी कि वहॉ से उसके गॉव वाले उसकी आवाज सुन लें।

अचानक राजकुमारी के दिमाग में एक विचार आया। वह समुद्र के किनारे की तरफ दौड़ी। वहॉ उसको रेत में एक खाली शंख[9] पड़ा मिल गया। उसने वह शंख अपने होठों से लगाया और उसमें ज़ोर से हवा फूॅकी तो वह शंख ज़ोर से बज उठा।

राजकुमारी उस केंकड़े के वे आगे वाले हाथ चॉद की तरफ बढ़ते हुए देख रही थी – खटाक, खटाक, खटाक। राजकुमारी ने एक बार फिर ज़ोर से शंख बजाया और फिर उसको बजाती ही रही और वह केंकड़ा भी चॉद के और पास आता ही रहा और आता ही रहा।

अबकी बार राजकुमारी ने अपने पूरे ज़ोर के साथ वह शंख बजाया और जैसे जैसे उस शंख की आवाज कम होती गयी गॉव में बजने वाले ढोल भी बन्द हो गये। गॉव वालों ने शंख की आवाज सुन ली थी।

राजकुमारी ने गॉव की तरफ देखा तो उसने देखा कि लोग अपने हाथों में मशाल लिये हुए समुद्र के किनारे की तरफ चले आ रहे हैं। मशालों की वह लाइन एक लहर की तरह दिखायी दे रही

[9] Translated for the word “Conch Shell”

थी जो समुद्र के किनारे की तरफ पहाड़ से नीचे की तरफ चली आ रही थी जहॉ राजकुमारी थी।

उसने वह शंख एक बार और बजाया और फिर अपने लोगों की तरफ भाग गयी।

लड़ने वाले लोग तलवार, चाकू और भाले आदि लिये हुए समुद्र के किनारे पर आ गये। उन्होंने उस तरफ देखा जिधर राजकुमारी इशारा कर रही थी।

उस उतने बड़े केंकड़े को देख कर उन टापू वालों की ऑखों में भी डर छा गया क्योंकि इतना बड़ा केंकड़ा उन्होंने भी पहले कभी नहीं देखा था। जब वह चॉद को पकड़ने की कोशिश कर रहा था तब तो वह पहाड़ से भी ऊॅचा लग रहा था।

उसका एक हाथ तो इतना ऊॅचा पहुॅच चुका था कि बस चॉद को छूने ही वाला था। सब लोगों की सॉसें रुकी हुई थीं। पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि चॉद उसके हाथों से फिसल गया और वह केंकड़ा पीठ के बल नीचे गिर पड़ा।

तभी राजकुमारी ने एक लड़ने वाले से एक भाला छीन लिया और समुद्र के किनारे की तरफ दौड़ी जहॉ वह केंकड़ा पलट कर उठने की कोशिश कर रहा था। राजकुमारी उस केंकड़े के पास पहुॅची तो उसके पीछे और लड़ने वाले भी दौड़े।

उसने अपना भाला उस केंकड़े के मुलायम पेट की तरफ ताना और उस केंकड़े के पेट में घुसा दिया। केंकड़े के आगे वाले हाथ बचाते हुए और लड़ने वालों ने भी ऐसा ही किया।

कुछ लड़ने वालों ने उसकी टॉगें काट लीं। एक ने उसका एक पंजा काट लिया दूसरे ने उसका दूसरा पंजा काट लिया। जल्दी ही केंकड़ा मर गया और चॉद बच गया। राजकुमारी की बहादुरी ने चॉद को बचा लिया था।

रात का आसमान आज भी चॉद की रोशनी से चमकता है। जहाज़ आज भी चॉद की रोशनी में चलते हैं। दुनियॉ भर में परिवार आज भी चॉद की रोशनी में केंकड़े के मॉस की दावत करते हैं। समुद्र का पानी आज भी किनारों से बाहर और अन्दर बहता है।

पर आज वह उस केंकड़े की वजह से नहीं बहता, लोगों का कहना है कि अब वह चॉद की अपनी तरफ खींचने की ताकत से बहता है।

पर उन टापू वालों का विश्वास है कि वह आज भी समुद्र की तली में उस केंकड़े के घर में पानी आने जाने की वजह से ही होता है हालॉकि वह केंकड़ा बहुत दिनों पहले मर चुका है।

3 केंकड़ा राजकुमार[10]

केंकड़ों की लोक कथाओं के इस संग्रह की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में एक राजकुमार एक केंकड़े के रूप में है।

एक बार एक मछियारा था जो कभी इतनी मछली नहीं पकड़ पाता था जिससे वह अपने परिवार का पेट भर सकता। इसलिये वह और उसका परिवार अक्सर ही भूखा रहता था।

एक दिन जब उसने अपना जाल पानी में से खींचा तो उसको अपना जाल इतना भारी लगा कि उसको उसे खींचना मुश्किल हो गया।

पर हिम्मत कर के उसने उसे खींच ही लिया तो उसने उसमें क्या देखा कि उस जाल में एक इतने बड़े साइज़ का केंकड़ा फॅसा हुआ था जिसको एक ऑख भर कर तो वह देख ही नहीं सकता था।

"ओह आखिर आज कितना बड़ा शिकार हाथ लगा। अब मैं अपने बच्चों के लिये बहुत सारा खाना खरीद सकता हूॅ।" उसने उस केंकड़े को अपनी पीठ पर रखा और घर ले गया।

[10] The Crab Prince – a folktale from Italy from its Venice area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. This book is available in HIndi from Sushma Gupta as an e-book for free.

उसने अपनी पत्नी को आग जला कर उसके ऊपर एक पानी भरा बर्तन रखने को कहा क्योंकि वह जल्दी ही बच्चों के लिये खाना ले कर लौटने वाला था और वह खुद उस केंकड़े को ले कर राजा के महल चल दिया।

वहॉ जा कर वह राजा से बोला — "हुजूर मैं आपसे इसलिये मिलने आया हूँ कि आप मुझसे यह केंकड़ा खरीद लीजिये। मेरी पत्नी ने बर्तन आग पर रख दिया है पर मेरे पास पैसे नहीं हैं जिससे मैं अपने बच्चों के लिये खाना खरीद सकूँ।"

राजा बोला — "पर मैं केंकड़े का क्या करूँगा? क्या तुम उसको किसी और को नहीं बेच सकते?"

तभी राजा की बेटी वहॉ आ गयी और उस केंकड़े को देख कर बोली — "अरे कितना अच्छा केंकड़ा है। पिता जी इसे आप मेरे लिये खरीद दीजिये न। हम इसको अपने मछली वाले तालाब में सुनहरी मछलियों के साथ रख देंगे।"

राजा की बेटी को मछलियॉ बहुत अच्छी लगती थीं। वह उस तालाब के किनारे बैठी बैठी घंटों घंटों उन मछलियों को देखती रहती थी जो उसमें तैरती रहती थीं।

उसका पिता अपनी बेटी की किसी बात को ना नहीं कर पाता था सो उसने उसके लिये वह केंकड़ा खरीद दिया। उस मछियारे ने उसे राजा के मछली के तालाब में डाल दिया।

राजा ने उसको सोने के सिक्कों से भरा एक बटुआ दे दिया जिससे वह अपने बच्चों को एक महीने तक खाना खिला सकता था। केंकड़ा वहीं छोड़ कर वह मछियारा वहॉ से चला गया।

अब राजकुमारी सारा समय वहीं उस मछली वाले तालाब के किनारे ही बैठी रहती और उस केंकड़े को ही देखती रहती। उस केंकड़े को देखते देखते वह थकती ही नहीं थी।

इतनी ज़्यादा देर तक वहॉ बैठे रहने से और उस केंकड़े को बराबर देखते रहने से अब वह उसको और उसके तरीकों को बहुत अच्छी तरह से जान गयी थी। उसने देखा कि वह केंकड़ा दिन के बारह बजे से लेकर दिन के तीन बजे तक गायब हो जाता था, भगवान जाने कहॉ।

एक दिन राजा की बेटी वहॉ उस केंकड़े को देखने के लिये बैठी हुई थी कि उसने दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी।

उसने अपने छज्जे से नीचे देखा तो एक खानाबदोश वहॉ भीख मॉगने के लिये खड़ा हुआ था। राजा की बेटी ने पैसों का एक थैला उसकी तरफ फेंक दिया पर वह वह थैला न लपक सका और वह उसके बराबर से हो कर एक गड्ढे में जा पड़ा।

वह खानाबदोश उस थैले के पीछे पीछे उस गड्ढे तक गया। गड्ढे में पानी था सो वह पानी में कूद पड़ा और तैरना शुरू कर दिया।

वह गड्ढा जमीन के नीचे नीचे एक नहर से राजा के मछली वाले तालाब से जुड़ा हुआ था और वह नहर भी न जाने कहॉ तक जाती थी।

वह आदमी उस मछली वाले तालाब तक पहुॅच कर उस नहर में निकल गया और एक बहुत बड़े जमीन के नीचे बने कमरे के बीच में बने एक बहुत छोटे से बेसिन[11] में निकल आया।

उस कमरे में बहुत बढ़िया परदे लटक रहे थे और एक बहुत ही सुन्दर मेज लगी रखी थी। वह आदमी उस बेसिन में से बाहर निकला और एक परदे के पीछे छिप गया।

जब दोपहर के बारह बजे तो उस बेसिन में से एक परी बाहर निकली जो एक केंकड़े के ऊपर बैठी हुई थी। उसने और केंकड़े दोनों ने मिल कर बेसिन का पानी बाहर कमरे में उलीच दिया।

फिर परी ने अपनी जादू की छड़ी से केंकड़े को छुआ तो केंकड़े के खोल से एक बहुत सुन्दर नौजवान निकल आया। वह नौजवान मेज के पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

परी ने फिर अपनी जादू की छड़ी मेज पर मारी तो वहॉ स्वादिष्ट खाना आ गया और बोतलों में शराब आ गयी। जब नौजवान ने अपना खाना पीना खत्म कर लिया तो वह फिर अपने केंकड़े वाले खोल में घुस गया।

[11] Basin is a natural or artificial hollow place containing water.

परी ने केंकड़े के उस खोल को फिर से छुआ तो वह केंकड़ा उस परी को ले कर फिर से बेसिन में कूद गया और उसको ले कर पानी में गायब हो गया।

अब वह आदमी परदे के पीछे से निकल आया और बेसिन के पानी में कूद कर फिर से राजा के मछली वाले तालाब में आ गया।

राजा की बेटी अभी भी वहीं बैठी अपनी मछलियों को तैरता देख रही थी। उस आदमी को उस तालाब में से निकलते देख कर उसने उससे पूछा — "अरे तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "राजकुमारी जी मैं आपको एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूँ।" फिर वह उस तालाब में से बाहर निकल आया और उसको वह सब कुछ बताया जो वह अभी अभी देख कर आ रहा था।

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो अब मेरी समझ में आया कि यह केंकड़ा बारह से तीन बजे के बीच में कहाँ जाता है। ठीक है कल दोपहर को हम दोनों एक साथ वहाँ जायेंगे और देखेंगे।"

सो अगले दिन वे दोनों उस तालाब के पानी में तैर कर उस जमीन के नीचे बनी नहर में तैरे और उस कमरे में बने बेसिन में आ निकले। बेसिन में से निकल कर वे एक परदे के पीछे छिप गये।

दोपहर के ठीक **12** बजे उस बेसिन में से वह परी एक केंकड़े के ऊपर बैठी बाहर निकली। उसने अपनी जादू की छड़ी उस

केंकड़े के खोल को छुआयी तो उसमें से एक सुन्दर नौजवान बाहर निकल आया और मेज के पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

राजकुमारी को वह केंकड़ा तो पहले से ही अच्छा लगता था पर अब वह उसमें से निकले सुन्दर नौजवान को देख कर उसके प्रेम में पड़ गयी।

अपने पास ही पड़ा केंकड़े का खाली खोल देख कर वह उस खोल के अन्दर छिप गयी। जब वह नौजवान अपना खाना पीना खत्म कर के अपने खोल में वापस आया तो वहॉ एक सुन्दर लड़की को पा कर उसने उससे फुसफुसा कर पूछा — "यह तुमने क्या किया, अगर कहीं परी ने देख लिया तो वह हम दोनों को मार देगी।"

राजा की बेटी ने भी फुसफुसा कर जवाब दिया — "पर मैं तुमको इस जादू से छुड़ाना चाहती हूॅ। बस तुम मुझे यह बता दो कि इसके लिये मुझे करना क्या है।"

नौजवान बोला — "यह नामुमकिन है। मुझे इस जादू से वही लड़की बचा सकती है जो मुझे इतना प्यार करती हो जो मेरे साथ मरने के लिये तैयार हो।"

राजा की बेटी बेहिचक बोली — "मैं वह लड़की हूॅ। मैं तुमसे प्यार करती हूॅ और तुम्हारे लिये मरने के लिये तैयार हूॅ।"

जब उस केंकड़े के खोल के अन्दर उन दोनों में ये सब बातें चल रहीं थी तब वह परी उस केंकड़े के खोल पर बैठी और उस

नौजवान ने रोज की तरह केंकड़े के पंजे बनाये और उस परी को ले कर वहॉ से जमीन के अन्दर वाली नहर से हो कर खुले समुद्र में ले गया।

उस परी को ज़रा सा भी शक नहीं हुआ कि उस खोल के अन्दर राजा की बेटी भी छिपी हुई थी।

जब वह परी को उसकी जगह छोड़ कर वापस उस मछलियों वाले तालाब में आ रहा था तो उस नौजवान ने जो एक राजकुमार था राजा की बेटी को जो अभी भी उस केंकड़े के खोल में उसके साथ ही बैठी थी बताया कि वह इस जादू से कैसे आजाद हो सकता था।

उसने कहा — "तुमको समुद्र के किनारे वाली एक चट्टान पर चढ़ना पड़ेगा और वहॉ जा कर कुछ बजाना और गाना गाना पड़ेगा। परी को संगीत बहुत अच्छा लगता है तो जैसे ही वह तुम्हारा गाना सुनेगी वह गाना सुनने के लिये पानी में से बाहर निकल आयेगी।

वह तुमसे कहेगी — "और गाओ ओ सुन्दर लड़की और गाओ। तुम्हारा संगीत तो दिल खुश कर देने वाला है।"

तब तुम जवाब देना — "मैं जरूर गाऊॅगी अगर तुम अपने बालों में लगा फूल मुझको दे दो तो।"

जैसे ही तुम अपने हाथ में वह फूल ले लोगी मैं उसके जादू से आजाद हो जाऊॅगा क्योंकि वह फूल ही मेरी ज़िन्दगी है।"

इस बीच में वह केंकड़ा मछलियों वाले तालाब में पहुँच चुका था सो उसने राजा की बेटी को उस खोल में से बाहर निकाल दिया।

वह खानाबदोश अपने आप ही उस नहर में से तैर कर बाहर आ गया था। नहर में से निकल कर जब उसको राजा की बेटी कहीं दिखायी नहीं दी तो उसको लगा कि वह तो बड़ी मुश्किल में पड़ गया है। अब वह राजा की बेटी को कहाँ ढूँढे।

फिर उसने देखा कि जल्दी ही वह लड़की मछलियों वाले तालाब में से निकल आयी। उसने उस खानाबदोश को धन्यवाद दिया और उसको बहुत सारा इनाम भी दिया।

उसके बाद वह अपने पिता के पास गयी और उससे कहा कि वह संगीत सीखना चाहती थी। अब क्योंकि राजा उसको किसी भी चीज़ के लिये मना नहीं कर सकता था सो उसने अपने राज्य के सबसे अच्छे संगीतज्ञों और गवैयों को बुलाया और उनको अपनी बेटी को संगीत सिखाने के लिये रख दिया।

जब उसने संगीत सीख लिया तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अब मैं समुद्र के किनारे वाली चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हूँ।"

"क्या? समुद्र के किनारे चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हो? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?" पर फिर हमेशा की तरह से उसको वहाँ जाने की इजाज़त भी दे दी।

पर उसने उसकी सफेद पोशाक पहने आठ दासियॉ उसके साथ कर दीं और उन सबकी सुरक्षा के लिये उन सबके पीछे कुछ दूरी से कुछ हथियारबन्द सिपाही भी भेज दिये।

राजा की बेटी ने चट्टान पर बैठ कर अपनी आठ दासियों के साथ अपनी वायलिन बजानी शुरू की।

संगीत सुन कर परी लहरों से निकल कर बाहर आयी और उस से बोली — "तुम कितना अच्छा बजाती हो ओ लड़की। बजाओ, बजाओ। तुम्हारा यह संगीत सुन कर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।"

राजा की बेटी बोली — "हॉ हॉ मैं और बजाऊॅगी अगर तुम अपने बालों में लगा यह फूल मुझे दे दो क्योंकि मुझे तुम्हारे बालों मे लगा यह फूल बहुत पसन्द है।"

परी बोली — "यह फूल तो मैं तुम्हें दे दूॅगी अगर तुम इसको वहॉ से ले सको जहॉ मैं इसको फेंकूॅ।"

उसने परी को विश्वास दिलाया — "मैं उसको वहॉ से जरूर उठा लूॅगी जहॉ भी तुम इसको फेंकोगी।" और उसने फिर अपना वायलिन बजाना और गाना शुरू कर दिया।

जब उसका गीत खत्म हो गया तब उसने परी से कहा — "अब मुझे फूल दो।"

परी बोली "यह लो।" और यह कह कर उसने वह फूल समुद्र में जितनी दूर हो सकता था फेंक दिया।

राजा की बेटी तुरन्त समुद्र में कूद गयी और उस फूल को लेने के लिये उसकी तरफ लहरों पर तैरने लगी।

उसकी आठ दासियॉ जो अभी भी चट्टान पर खड़ी थीं चिल्लायीं — "राजकुमारी को बचाओ, राजकुमारी को बचाओ।" उनके चेहरों के ऊपर पड़े सफेद परदे अभी भी हवा में हिल रहे थे।

पर राजा की बेटी तैरती रही तैरती रही। कभी वह लहरों में छिप जाती तो कभी उनके ऊपर आ जाती।

कुछ देर बाद उसको कुछ शक सा होने लगा था कि पता नहीं वह उस फूल तक कभी पहुॅच भी पायेगी या नहीं कि तभी एक बड़ी सी लहर आयी और वह फूल उसके हाथ में थमा गयी।

उसी समय उसने अपने नीचे से एक आवाज सुनी — "तुमने मेरी ज़िन्दगी मुझे वापस दी है इसलिये मैं तुमसे शादी करना चाहता हूॅ। अब तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे नीचे ही हूॅ। मैं तुमको किनारे तक पहुॅचा दूॅगा। पर तुम यह बात किसी को बताना नहीं, अपने पिता को भी नहीं।

अब मैं अपने माता पिता के पास जाता हूॅ और जा कर उनको यह सब बताता हूॅ और फिर चौबीस घंटों के अन्दर अन्दर आ कर मैं तुम्हारे माता पिता से तुम्हारा हाथ मॉगता हूॅ।"

उस समय क्योंकि तैरते तैरते राजा की बेटी की सॉस फूल रही थी इसलिये वह केवल इतना ही कह सकी — "हॉ हॉ मैं समझती हूॅ।" इतने में वह केंकड़ा उसको किनारे पर ले आया।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसने राजा से केवल इतना ही कहा कि वहाँ वायलिन बजा कर उसको बहुत ही अच्छा लगा।

अगले दिन तीसरे पहर तीन बजे ढोलों की और बाजे बजने की और घोड़ों की टापों की आवाज के साथ एक मेजर महल में दाखिल हुआ और बोला कि वह राजा से मिलना चाहता था।

उसको राजा से मिलने की इजाज़त दे दी गयी और फिर राजकुमार ने राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगा। राजकुमार ने राजा को अपनी सारी कहानी भी सुनायी।

राजा उसकी कहानी सुन कर सकते में आ गया क्योंकि अभी तक तो उसको इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं था।

उसने अपनी बेटी को बुलाया तो वह भागती हुई चली आयी और आ कर यह कहते हुए राजकुमार की बाँहों में गिर गयी — "यही मेरा दुलहा है पिता जी, यही मेरा दुलहा है।"

राजा ने समझ लिया कि अब वह कुछ भी नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार के साथ कर दे। और उसने उन दोनों की शादी कर दी।

4 सोने के अंडे वाला केंकड़ा[12]

केंकड़े की इस लोक कथा का यह केंकड़ा सोने के अंडे देता है। और केवल सोने अंडे ही नहीं बल्कि और बहुत कुछ भी देता है। इसको पढ़ कर तो तुमको लगेगा कि "काश एक ऐसा केंकड़ा हमें भी मिल जाये।"

एक बार एक राज[13] था जिसके दो बेटे थे। एक बार वह इतना बीमार पड़ा कि काम करने के लायक ही नहीं रहा। उसके इलाज में उसकी सारी बचत खत्म हो गयी पर फिर भी वह ठीक नहीं हुआ।

बचत खत्म होने के बाद उसने अपने घर की चीज़ें बेचनी शुरू कर दीं। यहॉ तक कि उसकी छत में लगे टाइल्स भी बिक गये।

एक दिन जब उसकी आलमारी बिल्कुल खाली पड़ी थी तो वह बोला — "अब मैं शिकार के लिये जाता हूॅ देखता हूॅ कि शायद मुझे कुछ चिड़ियें ही मिल जायें।"

किस्मत की बात उस दिन उसको एक चिड़िया भी दिखायी नहीं दी।

---

[12] The Crab With the Golden Eggs – a folktale from Italy from its Calabria area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. This book is available in Hindi from Sushma Gupta as an e-book for free.

[13] Translated for the word "Mason" who builds buildings.

पर जब वह घर वापस आ रहा था तो उसको एक केंकड़ा दिखायी दे गया जो एक बड़े से पत्थर पर चिपका हुआ था।

उसने उसको ज़िन्दा ही पकड़ लिया और उसको अपने थैले में रख लिया। वह सोचता जा रहा था कि वह इस केंकड़े को अपने बच्चों को खेलने के लिये दे देगा। सो घर जा कर उसने उस केंकड़े को अपने बच्चों को खेलने के लिये दे दिया। वह एक मादा केंकड़ा थी।

बच्चों ने उस मादा केंकड़े को एक छोटे से पिंजरे में बन्द कर दिया। अगली सुबह उन्होंने देखा कि उस मादा केंकड़े ने तो एक अंडा दिया है। वे उस अंडे को उठा कर अपने पिता के पास ले गये।

उस अंडे को देखते ही वह राज बोला कि "अरे यह तो सोने का अंडा है।" वह तुरन्त ही बाजार गया और उस सोने के अंडे को बेच आया। वह अंडा छह डकैट[14] का बिका।

वह मादा केंकड़ा हर रात एक सोने का अंडा देती थी और हर सुबह वह राज उस अंडे को बाजार में बेच आता। कुछ दिनों में ही वह राज बहुत अमीर हो गया क्योंकि अब तो उसकी छह डकैट रोज की आमदनी थी।

[14] Ducat – a currency used in those days in Italy. Shakespeare's "The Merchant of Venice" also mentions this currency. That drama is set in Italy of 1595.

इस राज के बराबर में एक दर्जी रहता था। राज की अमीरी देख कर उसने सोचा कि "मेरी समझ में यह नहीं आता कि यह इतना गरीब राज कुछ दिनों में ही इतना अमीर कैसे बन गया।"

कुछ दिनों तक उसके ऊपर नजर रखने के बाद उसने राज के अमीर बनने का राज़ जान ही लिया। उसकी अमीरी का राज़ था एक मादा केंकड़ा।

इस दर्जी के तीन बच्चे थे – दो लड़के और एक लड़की। उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी की शादी इस राज के लड़के से कर देता हूँ। सो दोनों की सगाई कर दी गयी।

दर्जी उस राज से बोला — "मैं अपनी बेटी का दहेज तैयार कर रहा हूँ पर तुम भी अपने केंकड़े को अपने बेटे के दहेज में देने के लिये तैयार रखना।"

राज ने जवाब दिया — "जब तक वह मेरे बेटे का दहेज है वह तैयार है।"

जब दर्जी को केंकड़ा मिल गया तो उसने केंकड़े को ध्यान से देखा तो उसने देखा कि उसके पेट पर तो कुछ लिखा था।

अब वह तो दर्जी था सो वह तो लिखना पढ़ना जानता था सो उसने पढ़ा – "जो कोई भी केंकड़ा और उसका खोल खायेगा वह एक दिन राजा बन जायेगा। जो कोई केंकड़ा और उसके पैर खायेगा उसको हर सुबह अपने तकिये के नीचे पैसों का एक थैला मिलेगा।"

इसको पढ़ कर दर्जी ने सोचा मैं इस केंकड़े को अपने दोनों बेटों को खिला देता हूँ। एक को केंकड़ा और उसका खोल और दूसरे को केंकड़ा और उसके पैर। बस फिर दोनों ही अपने अपने तरीके से अमीर हो जायेंगे।

उसने उस केंकड़े को मार कर आग पर भूनने के लिये रख दिया और अपने बेटों को बुलाने चला गया।

जैसे ही वह अपने बेटों को बुलाने के लिये वहाँ से गया तो उस राज के दोनों बेटे वहाँ आ गये जिसकी वह मादा केंकड़ा थी। केंकड़े को आग पर भुनते देख कर उनके मुँह में पानी आ गया।

उन्होंने आपस में कहा कि "चलो हम लोग इसे खा लेते हैं। तुम इसका खोल खा लो और मैं इसके पैर खा लेता हूँ।" और दोनों ने उसके खोल और पैर खा लिये।

जब दर्जी वापस आया तो उसने देखा कि उसकी वह मादा केंकड़ा तो जा चुकी है। यह देख कर दर्जी बहुत दुखी हुआ और उसने अपनी बेटी की शादी तोड़ दी।

यह देख कर राज के बेटों को लगा कि उन्होंने यह सब क्या कर दिया। इससे दुखी हो कर उन्होंने सोचा कि उनको घर छोड़ कर चले जाना चाहिये और दुनियाँ में जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। ऐसा सोच कर वे दोनों घर छोड़ कर चले गये।

वे जब पहले शहर में आये तो वहॉ रात को एक सराय में रुके। सुबह को जब वे उठे तो छोटे भाई ने अपने तकिये के नीचे पैसों से भरा एक थैला पाया।

वह अपने बड़े भाई से बोला — "भैया, यहॉ तो इन लोगों ने हमको चोर ही समझ लिया है। लगता है हमको ललचाने के लिये इस सराय की मालकिन ने हमारे तकिये के नीचे यह पैसों का थैला रख दिया है। और अब वह हमारा चोरी का नाम लगा देगी।"

इतना कह कर वह उस पैसों के थैले को ले कर उस सराय की मालकिन के पास गया और बोला — "मैम हम चोर नहीं हैं। हम आपके इस थैले को वापस करने आये हैं और हमारा इस थैले को तुमको वापस करना ही इस बात को साबित करता है कि हमने इस पैसे को नहीं चुराया है।"

सराय की मालकिन को तो पैसों का थैला देख कर जैसे बिजली का सा झटका लगा।

उसने अपना आश्चर्य छिपा कर पैसों का वह थैला उस लड़के से ले लिया और बोली — "हॉ यह थैला तो मेरा ही है। मेरी यह बहुत बुरी आदत है कि मैं पैसा कहीं भी रखा छोड़ देती हूॅ और फिर भूल जाती हूॅ। तुमने अच्छा किया कि इसे मुझे वापस कर दिया।"

अगले दिन उस छोटे भाई के तकिये के नीचे से फिर एक पैसों का थैला निकला तो वह बोला — "लगता है कि वे हमारे ऊपर

अभी भी शक कर रहे हैं इसलिये अच्छा हो अगर हम यहॉ से कहीं और चले जायें।"

सो उसने वह थैला भी उस सराय की मालकिन को दे दिया। मालकिन बोली — "मै तुमको विश्वास दिलाती हूॅ कि मैंने इसको वहॉ किसी मतलब से नहीं छोड़ा। बस मैं ज़रा भूल ही जाती हूॅ। थैला वापस करने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

उन भाइयों ने उससे अपना बिल पूछा, उसको पैसे दिये और वहॉ से चल दिये। अगली रात उन्होंने एक जंगल में गुजारी जहॉ वे जमीन पर सोये। वहॉ उनको एक पत्थर का तकिया इस्तेमाल करना पड़ा।

पर अगले दिन फिर उस पत्थर के पास एक पैसों का थैला पड़ा था। उसको देख कर छोटा भाई बोला — "इससे तो यह पता चलता है कि वह सराय की मालकिन हमें अभी भी नहीं छोड़ रही। वह हमारे पीछे यहॉ तक आ पहुॅची। इस बार हम उसको यह पैसे वापस नहीं देंगे। तभी वह सीखेगी।"

पर जब उसने देखा कि वह कहीं भी सोये उसको हर दिन सुबह को यह थैला मिल रहा था तब उसकी यह समझ में आया कि वह उसकी अच्छी किस्मत से मिल रहा था न कि सराय की मालकिन से।

चलते चलते वे दोनों भाई एक चौराहे पर आये तो दोनों ने वहॉ से अपने अपने रास्ते अलग अलग कर लिये।

बड़े भाई ने छोटे भाई को एक बोतल दी और छोटे भाई ने बड़े भाई को एक चाकू देते हुए कहा — "यह चाकू लो भैया और जब तक यह चमकता रहेगा तब तक मेरी ज़िन्दगी को कोई खतरा नहीं है। पर जब इसमें जंग लगने लगे तो समझो कि मैं मर गया।"

उन्होंने पैसे आपस में बॉटे, एक दूसरे को विदा कहा और अपने अपने रास्ते चल दिये।

चलते चलते बड़ा भाई एक शहर में आ गया। वहॉ का राजा मर गया था सो मन्त्रियों ने एक घोषणा की कि "हमको अब ऐसा करना चाहिये कि हमको एक कबूतर छोड़ना चाहिये और जिसके सिर पर भी वह बैठेगा हम उसको ही अपना राजा बनायेंगे।"

अब हुआ क्या कि जब उन लोगों ने वह कबूतर छोड़ा तो वह उस बड़े भाई के सिर पर जा कर बैठ गया। तुरन्त ही उसने अपने आपको बहुत सारी गाड़ियों, सेना और बाजे से घिरा हुआ पाया।

पहले तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा था। पर जब बाद में उसको पता चला कि वह तो अब उस शहर का राजा बन गया है तो वह बहुत खुश हुआ।

वे सब मिल कर उसको महल ले गये। उसको राजा के कपड़े पहनाये, ताज पहनाया और उसको वहॉ का राजा बना दिया। अब वह वहॉ का राजा बन कर राज करने लगा।

इधर छोटा भाई एक और शहर में आ पहुॅचा। वहॉ उसने एक सराय में कमरा लिया। यह सराय एक राजकुमारी के महल के सामने

थी। यह राजकुमारी अभी कुँआरी थी और अपना सारा दिन अपने महल के छज्जे पर बैठ कर गुजारती थी।

एक दिन उसने इस छोटे भाई को सराय के छज्जे पर देख लिया तो वह उससे बात करने लगी। एक में से एक बात निकलती ही जाती थी और उनकी बातें खत्म होने पर ही नहीं आती थीं।

आखिर राजकुमारी बोली — "अगर तुम मेरे घर आना पसन्द करो तो हम लोग यहाँ कुछ आनन्द करें?"

"ओह यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी।" कह कर वह राजकुमारी के पास चला गया।

जब वह राजकुमारी के पास पहुँच गया तो राजकुमारी बोली — "आओ ताश खेलें?" सो उन लोगों ने ताश खेलना शुरू कर दिया। पर राजकुमारी हर बार जीत जाती थी और इस तरह वह लड़का हजारों डकैट हार गया।

पर इससे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसको पैसे की कमी नहीं पड़ रही थी। यह उसके उस पैसों के थैले का कमाल था जो उसको हर सुबह अपने तकिये के नीचे मिलता था।

यह सब देख कर वह राजकुमारी बड़े आश्चर्य में थी कि वह इतना अमीर कैसे हो सकता था।

उसने एक टोना टोटका करने वाले से पूछा तो उसने राजकुमारी को बताया कि उस अजनबी के शरीर के अन्दर एक जादू है जिसकी वजह से उसका पैसा कभी खत्म नहीं होता।

उसने राजकुमारी से यह भी कहा कि उसके अन्दर एक आधा केंकड़ा है जिसकी वजह से हर सुबह उसको पैसों का एक थैला अपने तकिये के नीचे रखा मिल जाता है।

राजकुमारी ने पूछा — "उस जादू को मैं अपने लिये कैसे ले सकती हूँ?"

वह टोने टोटके वाला बोला — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करना। यह एक दवा लो और इस दवा को उसकी शराब के गिलास में डाल देना और वह शराब उसको पिला देना।

यह दवा उसके पेट में जा कर जो कुछ भी उसके पेट में होगा वह सब बाहर निकाल कर ले आयेगी – वह आधा केंकड़ा भी। उसको तुम बहुत सँभाल कर साफ कर लेना और निगल जाना।

फिर वह पैसों का थैला बजाय उसके तकिये के नीचे से तुम्हारे तकिये के नीचे से निकलना शुरू हो जायेगा।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया और अब वह पैसों का थैला बजाय लड़के के तकिये के नीचे से उसके तकिये के नीचे से निकलना शुरू हो गया।

वह लड़का बेचारा फिर से गरीब हो गया। अब उसके पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी सब चीज़ें बेच दे और फिर से दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े।

वह चलता रहा चलता रहा और चलते चलते भूख से इतना कमजोर हो गया कि वह आगे नहीं जा सका और एक घास के मैदान में आ कर गिर गया।

वहॉ कम से कम उसके पास कुछ तो था खाने के लिये। उसने हाथ बढ़ा कर थोड़ी सी घास तोड़ी और खा ली।

इत्तफाक से वह घास चिकोरी[15] की एक जाति थी और जैसे ही उसने वह घास खायी वह गधा बन गया। उसने सोचा कम से कम अब मैं भूखा नहीं रहूँगा क्योंकि अब मैं घास खा सकता हूँ।

उसके बाद उसने एक पौधा और खाया जो देखने में बन्द गोभी जैसा लगता था। जैसे ही उसने उस पौधे को खाया तो लो, वह तो फिर से आदमी बन गया। उसने सोचा कि ये पौधे तो मेरा काम बना देंगे।

[15] Chicory – is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee. See the picture of its leaves above.

उसने उन दोनों घासों में से थोड़ी थोड़ी घास ले ली जिन्होंने उसको पहले गधे में बदल दिया था और फिर गधे से आदमी में बदल दिया था।

फिर उसने एक माली का रूप रखा और उसी राजकुमारी की खिड़की के नीचे इन घासों को बेचने चल दिया। उसने आवाज लगायी — "बढ़िया वाली चिकोरी ले लो बढ़िया वाली चिकोरी।"

राजकुमारी ने उसको सुना और उसके हाथ में मुलायम चिकोरी देखी तो उसको बुलाया और उस चिकोरी को तुरन्त ही चखा। उस को खाते ही वह एक गधा बन गयी।

उस लड़के ने उसके ऊपर तुरन्त ही एक गद्दी रखी और उसको महल की सीढ़ियों से नीचे की तरफ ले चला। कोई यह शक भी नहीं कर सका कि वह राजकुमारी थी।

वह उस गधे पर सवार हो कर एक ऐसी जगह ले गया जहॉ बहुत सारे आदमी काम कर रहे थे। उसने उन लोगों से कहा कि वह काम की तलाश में घूम रहा था सो अगर वे दे सकते हैं तो वे उसको कुछ काम दे दें।

उन्होंने उसको अपने यहॉ काम पर रख लिया और वह उस गधे पर दुगुने बोझ के पत्थर लाद कर लाने लगा। बोझ की वजह से वह गधा लड़खड़ा जाता था और उसके लड़खड़ाने पर वह उसको खूब मारता था।

लोग उससे पूछते कि वह उस गधे के साथ इतनी सख्ती का बर्ताव क्यों करता था तो वह उनको जवाब देता "यह मेरा अपना मामला है। तुमको इसमें बीच में बोलने की जरूरत नहीं है।"

यह देख कर उन्होंने राजा से शिकायत की तो राजा ने उसको अपने दरबार में बुला भेजा। उसने भी उससे पूछा कि वह उस गधे के साथ इतना बुरा बर्ताव क्यों कर रहा था।

लड़के ने जवाब दिया "क्योंकि इसके साथ ऐसा ही बर्ताव करना चाहिये।"

तभी उसने देखा कि उस राजा की कमर से एक चाकू लटका हुआ है। लो और यह चाकू तो वही चाकू था जो उसने अपने बड़े भाई को दिया था।

छोटा भाई बोला — "पहले मेरा वह पैसा वापस करो जो मैंने तुमको चौराहे पर दिया था।"

राजा बोला — "एक राजा से इस तरह से तुम्हारी बात करने की हिम्मत कैसे हुई?"

"तो फिर मुझे तुमसे कैसे बात करनी चाहिये? मैं तुमको पहचान गया हूँ। तुम मेरे भाई हो। यह देखो यह बोतल जो तुमने मुझे दी थी। और वह देखो मेरा दिया हुआ चाकू तुम्हारी कमर में।"

इस तरह दोनों भाइयों ने आपस में एक दूसरे को पहचान लिया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये। फिर छोटे भाई ने अपने बड़े

भाई को उस गधे के बारे में बताया जो कि सचमुच में एक राजकुमारी थी।

राजा ने पूछा — "अगर यह तुम्हारा आधा केंकड़ा वापस कर दे तो क्या तुम इसको राजकुमारी में बदल दोगे?"

"हॉ।"

"तो तुम उसको राजकुमारी में बदल दो।"

सो उस छोटे भाई ने उस गधे को वही दवा दी जो पहले राजकुमारी ने उसको दी थी। उस गधे ने सब कुछ उगल दिया – आधा केंकड़ा भी।

उसके बाद उस छोटे भाई ने उसको वह घास खिलायी जो देखने में बन्द गोभी जैसी लगती थी और जिसको खा कर वह फिर से राजकुमारी बन गयी। उस राजकुमारी से उसने फिर शादी कर ली। राजा ने अपने छोटे भाई को अपना जनरल बना लिया और फिर सब सुख से रहने लगे।

5 बेवकूफ बन्दर और केंकड़ा[16]

एक और लोक कथा एशिया महाद्वीप की। यह लोक कथा जापान देश में कही सुनी जाती है।

बहुत समय पुरानी बात है कि जापान की किसी दूर जगह में रेत के एक ढेर के किनारे एक केंकड़ा[17] रहता था।

एक दिन एक बन्दर वहॉ से आलूबुखारे[18] का एक बीज लिये हुए गुजरा। उसने देखा कि एक केंकड़ा अपने घर के पास धूप में बैठा चावल खा रहा है।

बन्दर ने सोचा कि यह कोई ज़्यादा मजेदार खाना होगा सो उसने केंकड़े से खाने के लिये वह चावल मॉगा। बन्दर ने केंकड़े से यह भी कहा कि वह उस चावल के बदले में अपना आलूबुखारे का बीज उसको दे देगा।

केंकड़ा राजी हो गया। उसने अपना चावल बन्दर को दे दिया और उससे उसका आलूबुखारे का बीज ले लिया।

अब केंकड़े ने सोचा कि उस आलूबुखारे के बीज को बो दिया जाये। सो उसने वह बीज बो दिया और कुछ ही दिनों में उस बीज में से एक छोटा सा पौधा ऊपर निकल आया।

---

[16] The Foolish Monkey and the Crab – a folktale from Japan, Asia.

[17] Translated for the word “Crab”

[18] Translated for the word “Plum”. See its picture above.

केंकड़ा उस पौधे की बड़ी देखभाल करता। उसको रोज पानी देता। उसको जंगली जानवरों से बचाता। जल्दी ही वह पौधा बड़ा हो गया और उसने फल भी देना शुरू कर दिया।

काफी दिनों बाद बन्दर एक बार फिर केंकड़े से मिलने आया। केंकड़े के आलूबुखारे के पेड़ को देख कर बन्दर बहुत खुश हुआ और उसके फल तो उसे बहुत ही अच्छे लगे। उसके फल देख कर उसके मुँह में पानी भर आया सो उसने केंकड़े से कुछ आलूबुखारे माँगे।

केंकड़ा बोला — "एक शर्त पर। मैं बहुत छोटा हूँ और फल तोड़ने के लिये ऊपर तक नहीं जा सकता। तुम ऊपर चढ़ जाओ तो जितने फल तुम पेड़ पर से तोड़ोगे उनमें से आधे तुम्हारे और आधे मेरे।" बन्दर राजी हो गया।

बन्दर तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ गया और उस पर से पके पके फल तोड़ने लगा। नीचे खड़ा केंकड़ा ऊपर की तरफ देखता रहा कि कब बन्दर फल तोड़ कर नीचे फेंकेगा और कब वह उन मीठे फलों को चखेगा।

पर बन्दर बहुत ही चालाक था उसने बहुत सारे फल तोड़ कर अपने कोट की जेब में भर लिये और जो फल बहुत रसीले थे उनको उसने अपने मुँह में ठूँस लिये।

कुछ कच्चे और हरे फल उसने तोड़ कर केंकड़े की तरफ फेंक दिये। और वे फल भी उसने इतने ज़ोर से फेंके कि केंकड़े बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

केंकड़े को यह सब देख कर बहुत ही बुरा लगा कि बन्दर ने उसको इस तरह धोखा दिया। उसने अपने आप तो फल खा लिये और उसको कच्चे कच्चे फल तोड़ कर फेंक दिये और वे भी इतने ज़ोर से फेंके कि उस बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

वह पहले तो बेचारा लाचार सा देखता रहा फिर उसके दिमाग में एक बात आयी।

वह बन्दर से बोला — "तुम समझते हो कि तुम बहुत होशियार और चालाक हो पर मुझे लगता है कि तुम पेड़ से सिर नीचा कर के नहीं उतर सकते।"

बन्दर ने कभी किसी शर्त को मना नहीं किया था और न ही वह अब यह सब शुरू करना चाहता था सो वह घमंड से बोला — "ओ बेवकूफ केंकड़े, तुम आज केवल भूखे ही नहीं रहोगे बल्कि अपनी शर्त भी हार जाओगे।"

कह कर बन्दर ने सिर नीचे कर के पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। केंकड़ा तो यह चाहता ही था कि बन्दर इस तरह से पेड़ पर से नीचे उतरे।

क्योंकि जैसे ही बन्दर ने उलटे उतरना शुरू किया तो उसकी कोट की जेबों में से सारे फल नीचे गिर पड़े और जमीन पर बिखर गये। केंकड़े ने सारे फल समेट लिये और अपने घर में घुस गया।

अबकी बार बन्दर की बारी थी। उसने जब यह देखा कि केंकड़े जैसे बेवकूफ जानवर ने उसे बेवकूफ बना दिया तो उसे बहुत गुस्सा आया।

वह उस रेत के ढेर के पास पहुँचा जहाँ केंकड़ा रहता था और उस केंकड़े के घर के सामने इस तरह आग जला दी कि उस आग का सारा धुँआ केंकड़े के घर के अन्दर जाने लगा।

आखिर केंकड़ा खाँसता हुआ अपने घर में से बाहर निकला पर बन्दर अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने केंकड़े को घूँसे मारे, लात मारी और उसको अधमरा सा छोड़ कर वहाँ से चला गया।

वह केंकड़ा अपनी घायल और अधमरी हालत में बहुत देर तक वहीं पड़ा रहा। कमजोरी की वजह से वह बेचारा हिल डुल भी नहीं सका और न ही किसी को पुकार सका।

थोड़ी ही देर में उसने किसी के पैरों की आवाज सुनी। उसने देखा कि तीन यात्री चले आ रहे थे – एक अंडा, एक मधुमक्खी और एक चावल कूटने वाली ओखली[19]।

[19] Translated for the word “Mortar”. See its picture above.

वे उस रेत के ढेर के पास से गुजर रहे थे कि उन्होंने केंकड़े को बहुत बुरी हालत में पड़े देखा। उसको देख कर तो वे सब सकते में आ गये।

उन्होंने दया कर के उसको उठा लिया और उसको उस रेत के ढेर के अन्दर उसके घर में ले गये। वहॉ उन्होंने उसके घावों पर मरहम लगाया और उसको उसके बिस्तर पर लिटा दिया।

बाद में केंकड़े ने उनको सारा हाल बताया। उसका हाल सुन कर तीनों यात्री बहुत गुस्सा हुए। यह सब सुन कर उन सबने मिल कर यह सोचना शुरू किया कि उस चालाक बन्दर से कैसे बदला लिया जाये।

केंकड़ा अभी ठीक नहीं था सो वह तो आराम कर रहा था तब तक तीनों यात्रियों ने कई प्याले हरी चाय[20] पी। चाय पीते पीते उन्होंने बन्दर से बदला लेने की एक योजना सोच ली।

अगले दिन उन्होंने खूब अच्छी तरह आराम किया और फिर उस घायल केंकड़े को उठा कर वे उसे उस किले में ले गये जहॉ वह बन्दर रहता था।

वहॉ जा कर मधुमक्खी खिड़की के ऊपर तक उड़ी और लौट कर आ कर सबको बताया कि उनका दुश्मन घर पर नहीं था। यह उनकी योजना के अनुसार बिल्कुल ठीक था।

[20] Translated for he words “Green Tea” – a popular Chinese drink

वे सब किले के अन्दर घुस गये और छिप कर अपने दुश्मन के आने का इन्तजार करने लगे।

अंडे ने भट्टी की राख में अपना घर बना लिया था और अपने आपको कालिख से पूरी तरह से ढक लिया था जिससे वह बिल्कुल काला हो गया था और किसी को पहचान में नहीं आ सकता था।

मधुमक्खी नहाने वाले कमरे में चली गयी और वहॉ एक अलमारी में छिप कर बन्दर का इन्तजार करने लगी। चावल कूटने वाली ओखली किले के बड़े से लकड़ी के दरवाजे के पीछे छिप गयी। और केंकड़ा बन्दर का स्वागत करने के लिये आग के पास बैठ गया।

जब अॅधेरा हो आया तो बन्दर घर वापस लौटा। उसने केटली में पानी भरा और चाय बनाने के लिये भट्टी में आग जलायी।

वह वहीं पास में बैठ गया और केंकड़े से बोला — "ओ बेवकूफ केंकड़े, तुम सचमुच ही बेवकूफ लगते हो। क्या तुम कोई दूसरी शर्त लगाने यहॉ आये हो? क्या तुम मेरी जीत इतनी जल्दी भूल गये?"

इसी समय आग में बैठा हुआ अंडा फूट गया और उसका सारा पीला हिस्सा बन्दर के मुॅह पर फैल गया। वह उसकी ऑखों में भी चला गया इससे वह करीब करीब अन्धा सा हो गया।

तुरन्त भाग कर वह नहाने वाले कमरे में अपना मुॅह धोने गया तो अलमारी में छिपी मधुमक्खी ने बाहर निकल कर उसकी नाक पर

कई बार काट लिया। मधुमक्खी के काटने से बन्दर को बहुत दर्द हुआ और इस सबसे वह बहुत परेशान हुआ।

वह समझ गया कि वह दुश्मनों से घिर गया है सो वह घर से बाहर निकल भागने के लिये किले के बाहर वाले दरवाजे की तरफ भागा। मधुमक्खी उसको फिर से काटने के लिये उसके पीछे भागी।

जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुँचा तो चावल कूटने वाली ओखली दरवाजे के पीछे से निकल आयी और उसके पीछे दौड़ती हुई और उसको पीटती हुई बाहर तक खदेड़ आयी।

बन्दर उसको देख कर डर के मारे वहॉ से दूर भाग गया।

वहॉ ऐसा कोई और नहीं था जो बन्दर की सहायता करता और अगर होता भी तो भी कोई उसकी सहायता करता नहीं क्योंकि सब जानते थे कि वह कितना नीच और चालाक था। इस तरह वह बन्दर कई सालों तक अपने घर के बाहर ही घूमता रहा।

केंकड़े ने अपने साथियों के साथ खूब खुशियॉ मनायीं और उसके बाद वे सब बहुत अच्छे दोस्त बन गये और सब बन्दर वाले किले में एक साथ ही रहने लगे। कुछ समय में केंकड़े के सब घाव भर गये और वह बिल्कुल ठीक हो गया।

पास की जगह में एक अमीर केंकड़ा रहता था। जब उस अमीर केंकड़े ने इस केंकड़े की बहादुरी की कहानी सुनी तो उसने अपनी बेटी की शादी उस केकड़े से कर दी। केंकड़े की शादी वाले दिन बहुत सारे मीठे मीठे आलूबुखारे मेहमानों को खिलाये गये।

कुछ समय बाद उनके घर एक छोटा केंकड़ा पैदा हुआ जो चावल कूटने वाली ओखली के साथ खूब खेलता था। इस तरह वे सब वहॉ बहुत दिनों तक बहुत आनन्द से रहे।

6 उसके पैरों पर पंख[21]

केंकड़े की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हेटी देश की लोक कथाओं से ली गयी है। देखो कि इसमें एक केंकड़ा एक गधी की किस तरह सहायता करता है।

एक बार की बात है कि गधी थी जिसका नाम था ज़ैल नैन पाई[22]। जब भी वह शहर में घूमने निकलती थी तो शहर में हर एक उसको ज़ैल कह कर पुकारता था "हैलो ज़ैल।" और ज़ैल के लम्बे बालों वाले कान उस आवाज पर खड़े हो जाते।

हालॉकि ज़ैल अपनी बड़ी बड़ी ऑखें घुमा कर उस आवाज का जवाब देना चाहती पर मैम चैरिटी[23] उसकी लगाम कस कर बॉधे रखती। बल्कि साथ में वह यह और कहती — "चलती रह ओ ज़ैल। मेरे पास तेरे इन मिलने वालों की पुकार के लिये समय नहीं है।"

अब शहर में हर कोई ज़ैल को जितना प्यार करता था उतना ही वह मैम चैरिटी से डरता भी था।

क्यों? क्योंकि वह बहुत जल्दी गुस्सा होती थी और किसी को कुछ भी बोलने वाली बुढ़िया थी। वह गाती हुई चिड़ियों पर पत्थर

---

[21] Wings on Her Feet – a folktale from Haiti, North America.
Adapted from the Web Site : https://www.candlelightstories.com/category/folktales/
Adapted by Adam price (Peace Corps Volunteer, Haiti, 1996-1998)

[22] Zel Nan Pye – name of the donkey

[23] Madam Charity – name of the mistress of donkey

फेंकती थी और छोटी छोटी बच्चियॉ जब हॅसती थीं तो उनको डॉटती थी पर ज़ैल के लिये वह सबसे ज़्यादा ख़राब थी।

हर शनिवार को मैम चैरिटी ज़ैल पर चावल और चीनी के भारी भारी बोरे लादती और उनको बाजार बेचने के लिये ले जाती।

हालॉकि मैम चैरिटी को मालूम था कि बाजार में जो पहले पहुॅचेगा वही अपना सामान जल्दी और सारा बेच देगा पर इसके बावजूद वह बहुत देर से उठती थी।

फिर वह गालियॉ देते हुए अपने चावल और चीनी के बोरे इकट्ठे करती और जल्दी जल्दी ज़ैल की पीठ पर लाद देती। फिर उनको वह रस्सी से इतना कस कर बॉध देती कि ज़ैल को सॉस लेनी भी मुश्किल पड़ जाती।

सबसे बाद में वह खुद ज़ैल पर बैठती उसके पेट में अपने पैर से एक ठोकर मारती और अपने पीछे धूल का बादल उड़ाती और चिल्लाती हुई चल देती "चल तेज़ चल ओ बेवकूफ, जल्दी जल्दी चल।"

ज़ैल की यह बात कभी समझ में नहीं आयी कि मैम चैरिटी उसके साथ इतनी नीचता का बर्ताव क्यों करती थी। ज़ैल बेचारी से जितनी जल्दी हो चकता था वह उतनी जल्दी बाजार पहुॅचने की कोशिश करती।

असल में उसको बाजार जाना अच्छा भी लगता था क्योंकि वहाँ उस गाँव के और आस पास के गाँवों के गधे भी अपने अपने मालिकों के साथ आते थे।

वे सब केलों के पेड़ों की ठंडी छाया में बैठ कर एक दूसरे से बातें करते। ज़ैल भी दूसरे गधों को अपने चुटकुले सुनाती और उनके चुटकुले सुनती। वह उनके साथ खेल भी खेलती। यह सब ज़ैल को बहुत अच्छा लगता और उसे इस दिन का इन्तजार रहता।

पर मैम चैरिटी के कोड़े उसके इस ट्रिप को बेकार कर देते।

एक शाम जब ज़ैल बाजार से लौट कर घर आयी तो ज़ैल का एक दोस्त टूलूलू केंकड़ा उसके पास आाया। यह केंकड़ा मैम चैरिटी के घर के पीछे वाले कम्पाउंड में रहता था।

उसने उससे पूछा — "ज़ैल तुम्हारा आज का दिन कैसा रहा?"

ज़ैल एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "अच्छा था। दूसरे गधों को देख कर और उनसे मिल कर अच्छा लगा। पर यह मैम चैरिटी ने आज मुझे इतनी ज़ोर से मारा कि मैं उनके साथ खेल नहीं पायी। मैं तो बस लेटी ही रही।"

ज़ैल आगे बोली — "तुम्हें मालूम है कि मैं काफी जल्दी चलती हूँ। साथ में मैं भारी बोझा ले जाने से भी नहीं डरती हूँ पर मेरी समझ में नहीं आता कि वह मुझे इतना मारती क्यों है।

टूलूलू बोला — "मैं जानता हूँ कि बाजार जाने के लिये मैम हमेशा ही देर से उठती है पर इस बात के लिये वह अपने आपको कभी गलत नहीं ठहराती और इसी लिये वह तुमको मारती है।"

ज़ैल उसकी बात मानती हुई बोली — "मुझे लगता है कि तुम ठीक बोल रहे हो। आज उसने कुछ ज़्यादा नहीं बेचा पर उसने मुझे हर बार से भी ज़्यादा मारा। दूसरे गधों का कहना है कि मैम चैरिटी से सभी डरते हैं इसलिये भी उसका सामान कम बिकता है।"

ज़ैल फिर बोली — "पर टूलूलू अब मैं और ज़्यादा सहन नहीं कर सकती। मेरी पीठ में दर्द होता है मेरे पैर भी दुखते है और मैं अब उसकी मार को भी और ज़्यादा नहीं झेल सकती।"

टूलूलू बोला — "तुम उसको कभी ज़ोर की दुलत्ती क्यों नहीं मारतीं?"

ज़ैल यह सुन कर डर गयी। वह डरी डरी सी बोली — "ओह नहीं नहीं टूलूलू। यह तो मैं कर ही नहीं सकती। यह ठीक नहीं है। बल्कि ऐसा करने पर तो वह मुझे इससे भी ज़्यादा मारेगी।"

टूलूलू बोला — "तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगली बार जब मैम चैरिटी बाजार जायेगी तब मैं उसको देख लूँगा। उसके बाद वह तुम्हें फिर कभी नहीं मारेगी।"

सो अगले शनिवार जब मैम चैरिटी सुबह सो कर उठी तो हर बार की तरह से देर से उठी ओर उठते ही उसने चिल्लाना शुरू कर दिया — "ओह सुबह के नौ बज गये मुझे तो बहुत देर हो गयी।"

वह अपने चावल और चीनी के बोरे इकट्ठा करती जा रही थी और चिल्लाती जा रही थी। तभी टूलूलू खिसक कर उसके दरवाजे के पास पहुॅच गया और एक चीनी के बोरे में छिप कर बैठ गया।

जब मैम चैरिटी ने अपने चावल और चीनी के बोरे ज़ैल के ऊपर लाद दिये और खुद भी उसके ऊपर बैठ गयी तो टूलूलू अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकला और उसने मैम के टखने[24] के पास से उसके लम्बे स्कर्ट का किनारा पकड़ लिया।

जैसे ही मैम चैरिटी सड़क पर पहुॅची तो यह सोचते हुए कि उसको बाजार के लिये कितनी देर हो चुकी है और दिनों की तरह से ज़ैल को मारने के लिये अपना हाथ उठाया।

पर जैसे ही उसका हाथ ज़ैल को मारने के लिये ज़ैल के सुन्दर कानों तक नीचे आने वाला था कि टूलूलू ने उसके पैर में अपने पंजे गड़ा दिये।

वह बुढ़िया चिल्लायी "आह आउच। लगता है जब मैं अपने चावल और चीनी बोरे इस गधी के ऊपर लाद रही थी तो मेरे पैर में चोट लग गयी।"

कुछ पल के लिये उसने अपने हाथ से अपने टखने को मल कर सहलाया। उस समय वह यह भूल गयी कि उसको बाजार के लिये देर हो रही थी पर फिर जल्दी ही उसके दिमाग में दूसरे चावल चीनी

[24] Translated for the word "Ankle"

बेचने वालों की शक्लें घूमने लगीं और वह चिल्लायी — "ओ ज़ैल की बच्ची क्या तू इससे ज़्यादा तेज़ नहीं चल सकती?"

पर ज़ैल तो पहले से ही बहुत तेज़ जा रही थी। वह और कितनी तेज़ जा सकती थी।

मैम चैरिटी ने एक बार फिर उसको मारने के लिये अपना हाथ उठाया पर पहले की तरह इससे पहले कि वह अपना हाथ उसको मारने के लिये नीचे लाती कि टूलूलू ने फिर से उसके टखने में काट लिया।

"उफ़।" मैम चैरिटी फिर चिल्लायी। "कितना बुरा दर्द है यह। मुझे थोड़ा सब्र रखना चाहिये। मुझे अपने टखने को और ज़्यादा आराम देना चाहिये।"

सो मैम चैरिटी यह सोचते हुए बाजार की तरफ चली कि अगली बार से उसको अपने बोरे गधी के ऊपर लादते हुए थोड़ा सावधान रहना चाहिये। और साथ में उसको सुबह में यह सब काम करने के लिये कुछ ज़्यादा समय की भी जरूरत थी क्योंकि यह सब शायद जल्दी में हुआ। तैयार होने के लिये उसको कुछ समय और चाहिये।

जब वे बाजार पहुँचे तो उसने ज़ैल को उधर ही की तरफ को मोड़ दिया जहाँ वह अपना सामान बेचने के लिये हर शनिवार बैठा करती थी। पर जब वह वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि उसकी जगह तो कोई और बैठा हुआ है।

इस बीच किसी और ने उसकी जगह ले ली थी और वह एक डिब्बे से अपनी चीनी नाप कर बेच रही थी। इसको देख कर तो उसके तन बदन में आग लग गयी और उसका हाथ फिर से ज़ैल को मारने के लिये उठा कि टूलूलू ने फिर से उसके टखने में काट लिया।

"उफ़ उफ़" मैम चैरिटी फिर चिल्लायी। पर अबकी बार उसकी चीख सुन कर बाजार के लोग उसके पास इकट्ठा हो गये।

एक चोटी बनायी हुई बच्ची ने उससे पूछा — "क्या हुआ?"

मैम चैरिटी कुछ रुँआसी सी हो कर बोली — "आज मुझे सुबह उठने में देर हो गयी तो तैयार होने की जल्दी में शायद मेरे पैर में चोट लग गयी। बहुत दुख रहा है यह।"

एक मछियारिन वहीं पास में खड़ी थी वह बोली — "मैम आपको जल्दी उठना चाहिये।" हालाँकि उस मछियारिन को मैम चैरिटी बहुत अच्छी नहीं लगती थी पर फिर भी वह उस बुढ़िया के लिये दुखी थी।

वह आगे बोली — "अगले हफ्ते मैं सुबह छह बजे तुम्हारे घर यह देखने आऊँगी कि तुम देर तक सोती न रह जाओ।"

एक फल बेचने वाली बोली "हाँ। मैं भी तुम्हारे घर तुमको जगाने आ जाऊँगी। ज़रा मैं तुम्हारा टखना तो देखूँ।"

यह पहली बार था कि उस फल बेचने वाली ने मैम चैरिटी से बात की थी। हालाँकि वह उसको बहुत अच्छी तरह से जानती थी

पर वह उससे बात करने से कतराती थी क्योंकि उसका स्वभाव अच्छा नहीं था।

पर आज की बात अलग थी क्योंकि आज तो उसके दर्द हो रहा था सो वह आज तो उससे बड़ी नम्रता से भी बात कर रही थी।

जब मैम चैरिटी ने देखा कि बाजार के लोग उसके टखने के बारे में कितने चिन्तित हो रहे हैं तो वह रोते रोते भी हॅस पड़ी।

उस दिन पहला दिन था जब मैम चैरिटी ने अपना सारा चावल और चीनी बेचा। शाम को जब बाजार खत्म हो गया तो वह शान्ति से ज़ैल पर चढ़ कर अपने घर चली गयी।

बाद में टूलूलू के कारनामों से बेखबर ज़ैल ने टूलूलू से कहा — "आज मुझे ऐसा लग रहा था कि वह मुझे मारने वाली है पर कुछ पल के लिये वह रुक गयी और दर्द से चिल्लायी। साथ में शाम को भी वह बिना मुझे मारे पीटे और बिना गालियॉ दिये ही चली आयी। पता नहीं यह बदलाव उसके अन्दर कैसे आया।"

उसकी यह बात सुन कर टूलूलू मुस्करा दिया और अपने दिन भर की शैतानियॉ याद करते हुए हॅस कर बोला — "जब भी उसका हाथ तुम्हें मारने के लिये ऊपर जाता मेरे पंजे उसके टखने में काट लेते। ऐसा इसलिये हुआ।"

ज़ैल मैम चैरिटी के पैर की चोट का ख्याल करते हुए बोली — "ओह मेरे भगवान। मुझे लगता है कि अब उसे पता चल गया है कि उसके मुझे मारने से मुझे कितनी तकलीफ होती है।"

7 केंचुए की ऑखें क्यों नहीं होतीं[25]

बच्चों तुमने केंचुए तो देखे ही होंगे। बरसात में बहुत निकलते हैं। पर क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि उनके ऑखें नहीं होतीं?

चीन के लोग जानते हैं कि ऐसा क्यों है। तो लो पढ़ो यह कहानी जो हमने चीन की दंत कथाओं से ली है कि केंचुए के ऑखें क्यों नहीं हैं।

ऐसा नहीं है कि केंचुए[26] की ऑखें पहले से ही नहीं थी। पहले उसके ऑखें थीं और वह देख सकता था। वह तैर भी सकता था और ज़मीन पर बहुत तेज़ी से चल भी सकता था। पर अब ऐसा नहीं है।

केंचुए का सबसे अच्छा दोस्त प्रौन मछली था और हालॉकि प्रौन मछली के ऑखें नहीं थीं फिर भी केंचुआ उसको तैरने में और जमीन पर चलने दोनों में सहायता करता था।

[25] Why an Earthworm Does Not Have Eyes – a legend from China, Asia. Adapted from the Book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. This book is available in Hindi from Sushma Gupta as an e-book for free.

[26] Translated for the word "Earthworm". See its picture above.

केंचुए को तैरने में बहुत मजा आता था पर जब भी वह पानी में जाता तो जनरल केंकड़ा[27] उसकी बहुत बेइज़्ज़ती करता और उसको मारता।

एक दिन जनरल केंकड़े ने उसको डुबोने की कोशिश की पर किसी तरह वह उससे बच कर अपने बिल में भाग गया। पर इस बात से वह बहुत घबरा गया और वहॉ बैठा बैठा वह बहुत देर तक रोता रहा।

जब प्रौन मछली को इस बात का पता चला कि उसका दोस्त रो रहा है तो उसे बहुत दुख हुआ और उसने उससे पूछा कि वह इतना दुखी क्यों था और वह उसकी किस तरह सहायता कर सकता था।

केंचुआ दुखी हो कर बोला — "एक दिन यह जनरल केंकड़ा तो मुझे मार कर ही दम लेगा क्योंकि मैं अपनी रक्षा करने के लिये बहुत कमजोर और मुलायम हूॅ।"

"किसने कहा कि तुम कमजोर हो और मुलायम हो? तुम तो बहुत मजबूत हो। तुम्हारे पास तो एक बहुत ही मजबूत हैल्मैट[28] भी है और अपने आपको सुरक्षित रखने के लिये एक कोट भी है।"

केंचुआ आगे बोला — "मैं तुमको अपनी ऑखें उधार दे सकता हूॅ अगर तुम जनरल केंकड़े से मुझे बदला लेने में मेरी सहायता करो

[27] General Crab. See its picture above

[28] Helmet – a strong cap to be worn on head to save one's head in fall or hurt. See its picture above.

तो। पर क्या तुम जब अपना काम खत्म कर लोगे तो मुझे मेरी ऑखें वापस कर दोगे?"

प्रौन मछली ने अपने दोस्त की सहायता करने का वायदा किया और उसको चीखते हुए सुना जब वह केंचुआ अपनी ऑखें निकाल रहा था। केंचुए ने अपनी ऑखें निकाल कर प्रौन की नाक के दोनों तरफ लगा दीं।

अब क्या था अब तो प्रौन मछली देख सकता था सो उसने हिम्मत बटोरी और जनरल केंकड़े से बदला लेने चल दिया।

वह जनरल केंकड़े को पुकारता हुआ पानी के किनारे तक तैर गया। पर जब वह केंकड़ा उसको दिखायी दिया तो वह उस खतरनाक अजीब से दिखायी देखने वाले जानवर से डर कर वहॉ से भाग कर पानी के नीचे चट्टानों के पीछे छिप गया।

जब सारा किनारा साफ हो गया तब वह प्रौन मछली उन चट्टानों के पीछे से बाहर निकला। उसको अपनी नयी ऑखें इतनी ज़्यादा अच्छी लग रही थीं कि उसने उन ऑखों को अपने दोस्त केंचुए को वापस न देने का निश्चय किया और उस दिन से वे उसी के पास हैं।

केंचुआ जिसके पास पहले ऑखें थीं अब वह बेचारा अन्धा हो गया था और प्रौन मछली जो पहले अन्धा था अब उसके पास ऑखें हो गयी थीं।

हालॉकि प्रौन के पास टॉगें थीं फिर भी अब वह सूखी जमीन पर चलने की हिम्मत नहीं करता था क्योंकि क्या पता कब उसको केंचुआ इधर उधर घूमता मिल जाये और वह उससे अपनी ऑखें वापस मॉग ले।

इस बीच केंचुआ अभी भी अपने दोस्त प्रौन के लौटने का इन्तजार कर रहा है। हालॉकि अब उसके पास ऑखें नहीं हैं पर वह अभी भी तैर सकता है। पर वह बहुत दूर तक जाने में डरता है कि कहीं जनरल केंकड़ा उसको मार न दे।

इस तरह से केंचुए ने अपनी ऑखें खोयीं और प्रौन मछली को ऑखें मिल गयीं। बेचारा केंचुआ।

8 छोटे केंकड़े की जादुई ऑखें[29]

केंकड़े की यह मजेदार कहानी हमने तुम्हारे लिये दक्षिण अमेरिका के ब्रज़ील देश की लोक कथाओं से ली है। इसमें देखो कि एक छोटा केंकड़ा अपनी ऑखों के साथ कैसे कैसे खेल खेलता है।

एक बार की बात है कि ब्राज़ील में एक केंकड़ा रहता था। उसकी ऑखें जादुई थीं। कैसे? कि वह अपनी ऑखों को बाहर निकाल कर उन्हें समुद्र के ऊपर उड़ा सकता था और फिर उन्हें वापस बुला कर अपने सिर में लगा सकता था।

बस उसे केवल यह कहना होता था कि "ओ मेरी ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।"

छोटे केंकड़े की ऑखें उसके सिर में से निकलतीं और बाहर निकल कर समुद्र पर घूमने चली जातीं। छोटे केंकड़े की ऑखें समुद्र के किनारे पर समुद्र का रेतीला तला देखतीं और दूर नीला गहरा समुद्र देखतीं। वे मूँगे की पहाड़ियों के आसपास घूमती हुई रंगीन मछलियॉ देखतीं और और भी बहुत सारी चीज़ें देखतीं।

जब छोटा केंकड़ा यह देखते देखते थक जाता तो वह अपनी ऑखों से कहता "ओ मेरी ऑखें अब समुद्र पर से वापस आ जाओ।"

---

[29] The Magic Eyes of Little Crab. A folktale from Brazil. Taken from the Web Site : https://www.mikelockett.com/storytelling?rec_id=200

तो वे उसके पास वापस आ जातीं और आ कर उसके सिर पर लग जातीं। यह उसके लिये एक अच्छा खेल था।

एक दिन जब छोटा केंकड़ा अपनी ऑखों से खेल रहा था तो वहॉ एक चीता[30] आ गया। तभी छोटे केंकड़े ने अपनी ऑखों से कहा "ओ मेरी ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" छोटे केंकड़े की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

चीते ने सुना छोटा केंकड़ा कह रहा था "ओह कितना सुन्दर है।" कुछ देर बाद छोटे केंकड़ा बोला "ओ मेरी ऑखें अब समुद्र पर से वापस आ जाओ।" तो उसने देखा कि छोटे केंकड़े की ऑखें वापस आयीं और उसके सिर पर लग गयीं।

चीता आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसने केंकड़े से पूछा — "केंकड़े भाई यह तुम क्या कर रहे हो?"

छोटा केंकड़ा बोला — "मैं अपनी ऑखों के साथ खेल रहा हूॅ। मैं अपनी ऑखें अपने सिर से बाहर निकाल सकता हूॅ और उन्हें गहरे नीले समुद्र के ऊपर उड़ने के लिये भेज सकता हूॅ। और फिर जब चाहूॅ मैं उन्हें वापस बुला सकता हूॅ। मैं जब ऐसा करता हूॅ तो मैं सुन्दर सुन्दर चीज़ें देख सकता हूॅ।"

[30] Translated for the wor "Jaguar". It is like panther or Cheetah like animal.

चीते ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के यह खेल मुझे भी एक बार दिखाओ न।"

सो छोटा केंकड़ा बोला — "ओ मेरी ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" छोटे केंकड़े की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

चीते ने पूछा — "अब तुम मुझे बताओ कि तुम क्या देख रहे हो?"

छोटा केंकड़ा बोला — "मुझे समुद्र के किनारे के पास समुद्र का रेतीला तला दिखायी दे रहा है। इसके अलावा मैं दूर का गहरा नीला पानी भी देख सकता हूॅ।"

चीता बोला — "अब तुम अपनी ऑखें वापस लाओ।"

छोटा केंकड़ा बोला — "ओ मेरी ऑखें अब समुद्र पर से वापस आ जाओ।" तो उसने देखा कि छोटे केंकड़े की ऑखें वापस आयीं और आ कर उसके सिर पर लग गयीं।

चीता बोला — "केंकड़े भाई यह तो बड़ी मजेदार चीज़ है। ऐसा मेरे लिये भी कर दो न।"

छोटा केंकड़ा बोला — "मैं कर तो सकता हूॅ पर मैं करूॅगा नहीं क्योंकि यह बहुत खतरे वाला काम है। समुद्र में एक बहुत बड़ी मछली रहती है। उसका नाम है ऊन्हालून्का मछली।[31] हो सकता है

[31] Oonhaloonka fish

वह आपकी ऑखों को देख ले और फिर समुद्र में से निकल कर उन्हें खा ले।"

चीता बोला — "मैं ऐसी बेवकूफ मछलियों से नहीं डरता। तुम बस मेरी ऑखों को समुद्र के ऊपर भेजो नहीं तो देख लो तुम्हें इसके लिये बहुत पछताना पड़ेगा।"

यह सुन कर छोटा केंकड़ा डर गया। वह तुरन्त बोला — "ओ चीते की ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" चीते की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

चीता तुरन्त ही चिल्ला कर बोला — "ओह यह सब कितना सुन्दर है। अब मुझे भी समुद्र के किनारे के पास के समुद्र का रेतीला तला दिखायी दे रहा है। इसके अलावा मैं दूर का गहरा नीला पानी भी देख सकता हूॅ। मूॅगे की पहाड़ियों के पास छोटी छोटी रंगीन मछलियॉ भी तैरती देख सकता हूॅ।"

कुछ पल बाद छोटा केंकड़ा बोला — "ओ चीते की ऑखें अब समुद्र के ऊपर से वापस आ जाओ।" तुरन्त ही चीते की ऑखें वापस आ कर उसके सिर पर लग गयीं।

चीता बोला — "केंकड़े भाई यह तो बहुत ही बढ़िया रहा। मेहरबानी कर के इसे दोबारा करो।"

छोटा केंकड़ा बोला — "मैं ऐसा कर तो सकता हूॅ पर मैं करूॅगा नहीं क्योंकि यह बहुत खतरे वाला काम है। समुद्र में एक बहुत बड़ी मछली रहती है। उसका नाम है ऊन्हालून्का मछली। हो सकता है

वह तुम्हारी ऑखों को देख ले और फिर समुद्र में से निकल कर उन्हें खा ले।"

चीता बोला — "मैं ऐसी बेवकूफ मछलियों से नहीं डरता। तुम मेरी ऑखों को समुद्र के ऊपर भेजो नहीं तो देख लो तुम्हें इसके लिये बहुत पछताना पड़ेगा।"

यह सुन कर छोटा केंकड़ा फिर डर गया। वह तुरन्त बोला — "ओ चीते की ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" चीते की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

पर तभी ऊन्हालून्का मछली ऊपर आयी और चीते की ऑखों को खा गयी। चीता चिल्लाया — "केंकड़े भाई मैं कुछ नहीं देख सकता सब ऑधेरा हो गया है। मेरी ऑखें वापस लाओ।"

छोटा केंकड़ा बोला — "चीते भाई मैं आपकी ऑखें वापस नहीं ला सकता। ऐसा लगता है कि जिसका मुझे डर था वही हुआ। ऊन्हालून्का मछली आयी होगी और आपकी ऑखें खा गयी होगी।"

चीता छोटे केंकड़े को धमकाते हुए बोला — "केंकड़े भाई मेरी ऑखें वापस लाओ नहीं तो तुम बहुत पछताओगे।"

यह सुन कर छोटा केंकड़ा फिर डर गया और जा कर एक बड़े पत्थर के नीचे छिप गया। चीता कुछ न देख पाने की वजह से बहुत गुस्से में था। वह इधर उधर भागने लगा और न देख पाने की वजह से कभी किसी से और कभी किसी से टकराने लगा।

एक गिद्ध ऊपर से उसका भागना देख रहा था। वह नीचे आया और चीते से पूछा — "चीते जी। आप क्यों चिल्ला रहे हैं और क्यों इधर उधर भागे भागे फिर रहे हैं।"

चीता बोला — "मैं इसलिये चिल्ला रहा हूँ क्योंकि छोटे केंकड़े ने मेरी ऑखें ले ली हैं और वह मुझे वापस नहीं दे रहा।"

गिद्ध बोला — "मैं आपको नयी ऑखें ला कर दूँगा अगर आप मेरा खाना ढूँढने में मेरी सहायता करें तो।"

चीता तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गया और गिद्ध दो ब्लूबैरीज़ लाने के लिये उड़ गया। जल्दी ही वह ब्लूबैरीज़ ले कर आ गया और चीते की ऑखों के गड्ढों में लगा दीं। अब वह पहले की तरह से देखने लगा।

चीता बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद गिद्ध भाई। आज के बाद जब भी मैं या मेरे परिवार का कोई भी सदस्य कोई भी शिकार करेगा तो उसके ढॉचे का मॉस और हड्डियॉ तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिये छोड़ देगा।"

आज तक भी जब भी चीते या उसके परिवार वाले कोई शिकार करते हैं तो उसका कुछ हिस्सा गिद्ध के लिये छोड़ देते हैं। उधर आज तक केंकड़े भी चीते के डर से समुद्र के किनारे चट्टानों के नीचे छिपे रहते हैं।

List of Stories in "Crab in Folktales"

1. How the Crab Got His
2. Saving the Moon
3. The Crab Prince
4. The Crab With Golden Eggs
5. The Foolish Monkey and the Crab
6. Wings on Her Feet
7. Why an Earthworm Does Not Have Eyes
8. The Magic Eyes of Little Crab

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिल पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022